This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

मत बांटो इंसान को

;जन नाट्य मंचऋ अक्टूबर १९८९ऋ २५ मिनटऋ ६ कलाकार। यह नाटक ७ नवंबर १९८६ को दिल्ली में सांप्रदायिक सद्भाव समिति द्वारा आयोजित अवामी मार्च के मौक़े पर लिखा गया था। मार्च से पहले दिल्ली के विभिन्न इलाक़ों में इसके कई प्रदर्शन किए गए।द्ध

पात्र विभाजन

१. आदमी
२. औरत
३. पंडित
४. मुल्ला
५. राजू गाइड
६. पात्र एक
७. पात्र दो
८. पात्र तीन
९. पात्र चार

एक समूह जिसमें कुछ लोग रामनामी दोशाले ओढ़े हुए, हाथों में खड़ताल और मजीरे बजाते हुए प्रवेश करता है। कीर्तन करते हुए यह समूह निकल जाता है। एक आदमी जिसके कंधे पर गठरी है, एक औरत के साथ इस जुलूस को देखता है। बहुत श्र(ा से नमन करता है, और कीर्तन गाता है। यह जुलूस फ्रीज़ होता है। दूसरी ओर से एक अन्य जुलूस आता है। लोगों ने सिर पर हरे पटके बांधे हुए हैं और क़व्वाली गा रहे हैं। इस जुलूस में ये दोनों भी शामिल हो जाते हैं, और जुलूस एक तरफ़ से निकल जाता है। दोनों जुलूस कीर्तन और क़व्वाली गाते हुए बैठते हैं, आवाज़ों से शहर का माहौल बनाया जाता है।

आदमी : एक, दो, तीन, चार... दस ;*औरत से*द्ध याद रखना एक बार दस हो गए।

औरत : ;*उंगलियों पर गिनते हुए*द्ध हां, एक बार दस हो गया।

आदमी : एक... दस, अब दो बार दस हो गए।

औरत : हां, दो बार दस हो गए। पर अभी तो हम शहर में पहुंचे ही हैं और तुमने यह लेन-देन का हिसाब शुरू कर दिया।

आदमी : ;*हँसते हुए*द्ध चल पगली कहीं की, तेरे दिमाग़ से भी गांव निकलेगा नहीं। अरे हम शहर में हैं और फिर मैं तो इस सामने वाली इमारत की मंज़िलें गिन रहा था।

औरत : अब छोड़ो भी न, तुम तो शहर में पहुंचते ही ठिठोली करने लगे। अब भला बताओ इतनी बड़ी इमारत की मंज़िलें तुम गिन सकते हो।

आदमी : अरे गिन काहे नहीं सकता, अभी बताता हूं एक दो...

औरत : ;*काटते हुए*द्ध अब रहने भी दो। इतनी ही गिनती का हिसाब-किताब आता तो साहूकार के हाथों अपना घर-बार न लुटाना पड़ता और हमें शहर न आना पड़ता।

आदमी : अच्छा-अच्छा छोड़ भी अब यह गांव के चक्कर। अरी यह शहर है, यहां किसी चीज़ की कमी नहीं है। बड़ी-बड़ी इमारतें हैं, लम्बी चौड़ी सड़कें हैं।

औरत : हां यह तो है, और तुमने देखी थी वो सड़क के ऊपर सड़क।

आदमी : हां, इतना सब कुछ है यहां पर तो हमें भी सिर छुपाने को एक छत मिल ही जाएगी। मेहनत मजूरी करेंगे तो भगवान सब कुछ देगा। उसके घर देर है लेकिन अंधेर नहीं।

औरत : हां यहां किसी चीज़ की कमी नहीं है। हर तरफ़ ख़ुशहाली ही ख़ुशहाली है। एक तरफ़ आरती की आवाज़ तो दूसरी तरफ़ मस्जिद से अज़ान, और जानते हो इसके बीच क्या होगा?

आदमी : क्या होगा?

औरत : इसके बीच होगा हमारा छोटा-सा प्यारा-सा घर और घर पर होगी एक पक्की मज़बूत छत।

आदमी : हां, एक पक्की मज़बूत छत ;*दोनों गाते हैं*द्ध
तोड़ नाता गांव से अब आ गये हैं शहर हम
सर के ऊपर छत जो हो तो भूल जाएं ये भी ग़म
गारे की या टीन की हो इतना हो पर छत में दम
बह न जाएं बरखा में और धूप में झुलसें न हम
मेहनत और मज़दूरी करके सांझ को जब लौटें हम
प्यार से देखें इक दूजे को मुझको तुम और तुमको हम

एक ग्रुप नारा लगाते हुए जुलूस की शक्ल में बढ़ता है ''मंहगाई का देखो खेल, ना है चीनी ना है तेल'' दूसरा ग्रुप भी यही नारा लगाते हुए उठता है। दोनों ग्रुप्स एक्टिंग एरिया में फ्रीज़ होते हैं।

औरत : अजी सुनते हो, तेल और नून की कमी ने यहां भी लोगों

को परेशान कर रखा है।

आदमी : अरी पगली! जहां पैदावार होती है जब वहां ही लोगों को पूरा नहीं पड़ता तो शहर का हाल कौन जाने।

औरत : और हम यह लंबी-चौड़ी सड़कें, बड़ी-बड़ी इमारतें देखकर समझ बैठे थे, कि यहां किसी चीज़ की कमी ही नहीं है।

आदमी : अरी पगली! हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और होते हैं। *;दोनों गाते हैंद्ध*

थे बहुत अनजान पर हम जल्द गये जान
क्या हक़ीक़त मुल्क की है हम गये पहचान
दूरदर्शन कह रहा था मेरा भारत है महान
आंकड़े करते बयां पर और ही कुछ दास्तान

[एक ग्रुप नारे लगाता हुआ गुज़रता है।]

ग्रुप-१ : बारह करोड़ बेरोज़गार[कौन है इसका ज़िम्मेदार
यह सरकार यह सरकार[टाटा बिड़ला की सरकार

[दूसरा ग्रुप नारे लगाता हुआ गुज़रता है।]

ग्रुप-२ : बोल मजूरे हल्ला बोल, हल्ला बोल हल्ला बोल

[दोनों ग्रुप फ़्रीज़ होते हैं। आदमी और औरत गाते हैं।]

दिन पे दिन बढ़ती ही जाती मंहगाई की मार
बेसबब ठहरी पढ़ाई लाखों लाख बेकार
कर रहा था सड़कों पे ऐलान यह अवाम
सबको शिक्षा सबको काम, सबको शिक्षा सबको काम

[दोनों ग्रुप्स ऐलान करते हुए अपनी-अपनी जगह पर बैठते हैं।]

ऐलान यह सुन लो हमारा करते हैं हम बेधड़क
भीख नहीं मांगते हम मांगते हैं अपना हक़

[एक पंडित और एक मुल्ला सांप्रदायिक नारे लगाते हुए आते हैं।]

आदमी : हां मगर कुछ लोग थे जो आग थे भड़का रहे
नाम लेकर धर्म का लोगों को थे लड़वा रहे

औरत : हाथ में उनके छुरे थे आंखों में बस ख़ून था
मुंह पे नारा धर्म का आवाज़ों में जुनून था।

पंडित : हिंदुओं उठो! तुम जागोगे तो देश जागेगा। कब तलक यूं ही गहरी निद्रा में लीन रहोगे।

मुल्ला : ऐ ख़ुदा के बंदो जागो! तुम्हारे इम्तिहान की घड़ी आ पहुंची है, आज तुम्हारा मज़हब, तुम्हारा ईमान ख़तरे में है।

पंडित : अपने अधिकारों की रक्षा के लिए कमर कस लो। उठो और श्री राम जन्म भूमि को मुक्त कराओ।

मुल्ला : आज ख़ुदा ने तुम्हें एक बार फिर गाज़ी बनने का मौक़ा दिया है, आज यहां पर इस्लाम का नामो-निशान ख़त्म करने की साज़िश जन्म ले रही है।

पंडित : तुम्हारे भीतर का राम क्या तुम्हें कचोटता नहीं? चालीस साल से बंद हैं श्री राम एक कारागार में। उठो और उन्हें मुक्त कराओ।

मुल्ला : अगर आज ख़ुदा की इबादतगाह की हिफ़ाज़त नहीं कर पाए तो इस्लाम का नामो-निशान मिट जाएगा। उठाओ अपनी शमशीर और कूच करो बाबरी मस्जिद की ओर।

पंडित : उठो हिंदुओ कि अपने गौरवशाली अतीत को फिर से जिएं, और फिर बनाओ वहीं मंदिर जहां खेली थीं श्री राम ने अपनी बाल लीलाएं।

मुल्ला : हलफ़ उठाओ कि जब तक इस्लाम का एक भी ख़िदमतगार मौजूद है तब तक हम इस इबादतगाह की एक भी ईंट को किसी के नापाक हाथ न लगने देंगे और जो भी नापाक हाथ उस तरफ़ उठेगा उसे काटकर फेंक देंगे। नारा ए तकबीर... अल्लाह हो अकबर।

पंडित : गर्व से कहो, हम हिंदू हैं।

[दोनों सांप्रदायिक नारे लगाते हुए अपनी-अपनी जगह पर वापस आते हैं। आदमी और औरत दोनों बीच में खड़े रह जाते हैं। दोनों गाते हैं।]

ढूंढ़ते फिरते हैं इस शहर में इक ठौर
पर करता नहीं अपनी बात पर कोई गौर[२
कैसी उलझन में है ये शहर मशग़ूल
असली मुद्दा है क्या हैं गए लोग भूल[२
चाहते हर दरो दीवार का इक घर बने
व्यर्थ की बातों को दे रहे हैं वो तूल[२

[गाने के बाद हिंदू और मुस्लिम सांप्रदायिक समूह नारे लगाते हुए आते हैं। दोनों समूह एक दूसरे की तरफ़ देखते हुए आगे बढ़ते हैं। फिर आक्रमण की मुद्रा में झपटते हैं। पंडित और मौलवी को छोड़कर बाक़ी सब गिर जाते हैं। कुछ देर सन्नाटा रहता है। धीरे-धीरे गाने की आवाज़ के साथ सब उठते हैं और एक इमारत की शक्ल में विरचना बनाते हैं।]

गाना : मेहनत का ज़ोर है
हैय्यशा भई हैय्यशा
काम पुरज़ोर है
हैय्यशा भई हैय्यशा
अपना पसीना बहा,
हैय्यशा भई हैय्यशा
मालिक का शोर है
हैय्यशा भई हैय्यशा

[एक पात्र प्रवेश करता है और दर्शकों को संबोधित करता है।]

राजू गाइडः हां तो मेहरबान, क़दरदान, थूकदान-पीकदान, ज़ीनत अमान सबको सलाम और आदाब के बाद आपके हुज़ूर में अपने आपको पेश करता हूं।

मेहरबान शहर के चप्पे-चप्पे के बारे में ख़ाकसार ख़बर रखता है। किस मंत्री के घर कौन-सा उद्योगपति नाश्ते

पर आया था से लेकर मुन्नीबाई के लेटेस्ट आशिक़ के बारे में हमको ख़बर रहती है। सी.बी.आई. ही नहीं कभी कभी तो सी.आई.ए. वाले भी शहर की सरगोशियों के बारे में मुझसे जानकारी लेते हैं।

[आदमी और औरत का प्रवेश।]

नहीं पहचाना आपने, आप पहचानेंगे भी कैसे, शहर में नए आए लगते हैं। वैसे इस शहर की दरोदीवार, मुंशी, नाई, हरनाम, बन्तो, मुन्ना, रानो, ऐशो, शब्बो और तो और हीरा लाल चाटवाला भी राजू गाइड को जानता है। भाइयो और बहनो राजू गाइड हर चीज़ बर्दाश्त कर लेता है लेकिन डिस्टरबॅन्स नहीं मांगता है, क्योंकि एक बार हम आप जैसे लोगों को ताजमहल दिखा रहे थे कि बीच में हमको किसी ने टोक दिया। जानते हैं क्या हुआ? राजू गाइड बेचारा पिटते-पिटते बचा क्योंकि हम अचानक लालक़िले के बारे में बताने लगे थे। वह तो शुक्र कीजिए कि किसी को इतिहास के फ़ैक्ट्स मालूम नहीं थे वरना। ख़ैर राजू गाइड ने अपने बारे में तो आपको बहुत कुछ बता दिया अब ज़रा यहां के इतिहास के बारे में भी कुछ बयान कर दूं। यहां का इतिहास मेरे बुज़ुर्गों से भी पुराना है, क्योंकि मेरे दादा के परदादा के दादा के ज़माने से तो हम ही ख़ानदानी गाइड का काम कर रहे हैं। अब इस इमारत को देखिए और इसकी नक़्क़ाशी पर ग़ौर फ़रमाइए। कहा जाता है कि इसकी एक मेहराब तैयार करने में सौ कारीगरों को लगभग पांच साल लग गए थे। हाय क्या लोग हुआ करते थे और किस क़दर अपने काम से इश्क किया करते थे। आप वो सामने वाली हरी मीनार देखते हैं, क्या ख़ूब लग रही है।

[इमारत में से एक पात्र बाहर निकलता है। इमारत का एक हिस्सा ढह जाता है। पात्र निकलकर राजू गाइड को संबोधित करता है।]

पंडित : अबे तुझे यह हरा रंग दिखाई देता है। अबे यह तो जोगिया रंग है।

राजू गाइडः माफ़ कीजिए पंडित जी, अभी मैं उस जोगिया गुंबद पर ही आ रहा था।

[एक और पात्र इमारत से बाहर निकलता है और राजू गाइड को संबोधित करता है। इमारत का दूसरा हिस्सा भी ढह जाता है।]

मुल्ला : हट नामुराद तुझे यह जोगिया नज़र आ रहा है। अबे यह तो पूरी इमारत ही हरे रंग की है।

पंडित : आप तो मुझे सावन के अंधे नज़र आते हैं जनाब, जो जोगिया रंग को हरा बता रहे हैं। भला भगवान के घर में हरे रंग का क्या काम?

मुल्ला : क्या, क्या कहा? अबे होश की बात कर। यह तो खुदा की इबादतगाह है।

पंडित : देखो जी ज़रा संभलकर बात कीजिए। धर्म के मामले में हमें मज़ाक़ बिल्कुल पसंद नहीं है, हां।

मुल्ला : हां, हमारी बातें तो तुम्हें मज़ाक़ ही लगेंगी। जनाब इस जगह को हमारे बुज़ुर्गों ने बनवाया था।

पंडित : तुम्हारे बुज़ुर्ग! अबे कितने पुराने हैं तुम्हारे बुज़ुर्ग। क्या हमारे भगवान से भी पुराने हैं। अबे हमारे भगवान तो लाखों साल पहले आए थे।

राजू गाइडः लाखों साल पहले! क्या कह रहे हैं आप? इसका ढांचा तो इतना पुराना नहीं है।

पंडित : तू चुप कर बे, बस बहुत हो गया। अब आप सभी अपना रास्ता नापो। यह मंदिर हमारा है, इससे अधिक हमें कुछ नहीं कहना।

मुल्ला : हां, हां, सब कुछ अपना बना लो। हमारे लिए नमाज़ पढ़ने को दो गज़ ज़मीन भी न छोड़ना। हम भी कह देते हैं यह हमारी मस्जिद है। हम भी इसके आगे कुछ नहीं सुनना चाहते।

पंडित : यह हमारा मंदिर है।

मुल्ला : यह हमारी मस्जिद है।

दोनों : *;झगड़ते हुए एक साथ बोलते हैंध्द* मंदिर है, मस्जिद है, मंदिर है, मस्जिद है।

राजू गाइडः क्यों झगड़ रहे हैं आप, यह केवल एक इमारत है।

पंडित : यह मंदिर है।

मुल्ला : यह मस्जिद है।

[दोनों राजू गाइड को धमकाने वाली नज़रों से देखते हैं।]

मुल्ला : *;राजू गाइड सेध्द* क्या है ये?

राजू गाइडः जी मस्जिद।

पंडित : क्या है ये?

राजू गाइडः जी मंदिर।

दोनों : *;जल्दी-जल्दी पूछते हैं।ध्द* क्या है ये? क्या है ये?

राजू गाइडः जी मंदिर, जी मस्जिद, जी मंदिर, जी मस्जिद।

[दोनों राजू गाइड को मारते हैं।]

आदमी : अरे भैयाजी आप इसे क्यों मार रहे हैं?

पंडित : अबे देखता नहीं वो हमारे पवित्र स्थल को गाली दे रहा है।

मुल्ला : वो हमारी मस्जिद को मंदिर बता रहा है।

आदमी : पर उसने तो ऐसा कुछ नहीं कहा, वो तो आप लोगों को लड़ने से रोक रहा था।

दोनों : *;एक साथध्द* तू चुप कर वरना तुझे भी लगाते हैं दो झापड़।

आदमी : अरे ठहरिए जनाब, मेरी बात तो सुनिए। अगर दो समुदायों के बीच कोई झगड़ा है तो उसे मिल बैठकर सुलझाएं,

आप तो उसे ही मारने को दौड़ते हैं जो आपको आपस में लड़ने से रोक रहा है।

औरत : बड़ा अजीब दस्तूर है आपके शहर का। हम तो यहां पर आए थे काम की तलाश में। सोचा था कि अपना एक छोटा-सा घर बनाएंगे। हर तरफ़ लोगों में जोश था, लोग अपने-अपने हक़ की बात कर रहे थे। फिर अचानक यह माहौल बदला और लोग आपस में लड़ने लगे। अपने हक़ की बात तक भूल गए। आख़िर सवाल है क्या?

राजू गाइडः सवाल बहुत बड़ा है।

एक : सवाल यह है कि हमें रोज़गार मिलेगा या नहीं...

दो : सवाल यह है कि चीनी, तेल कभी सस्ते दामों पर नसीब होंगे या नहीं...

तीन : सवाल यह है कि जो पढ़ाई हमने की क्या वो व्यर्थ ही जाएगी?

चार : सवाल यह है कि हमें छत मिलेगी या नहीं...

राजू गाइडः आप सब ठीक कह रहे हैं, लेकिन अपने हक़ों की बात से बढ़कर भी एक सवाल हमारे सामने है।

पंडित : बिल्कुल ठीक। यह रोज़गार, यह मंहगाई की समस्या तो केवल एक मायाजाल है, आज महत्वपूर्ण सवाल है धर्म की रक्षा का, पूर्वजों की जन्मस्थली का।

मुल्ला : हां, इस वक़्त सवाल है दीनो ईमान का। दीनो ईमान के सामने सब बेमानी हैं।

आदमी : सवाल वो नहीं है जो धर्म के ये ठेकेदार हमें बता रहे हैं। सवाल यह है कि अगर इन धर्म के ठेकेदारों की वजह से देश टुकड़े-टुकड़े हो गया तो क्या हम एक रह पाएंगे? अरे अगर दो समुदायों के बीच कोई झगड़ा है तो उसे मिल बैठकर सुलझाओ।

सब : उसे मिल बैठकर सुलझाओ।

राजू गाइडः सवाल यह है कि ये देश, ये मुल्क जिसे हमने २०० साल की गुलामी के ख़िलाफ़ लड़कर आज़ाद करवाया था, जिसके लिए बहादुर शाह, तात्या टोपे, हैदर अली, टीपू सुल्तान, भगत सिंह, अशफ़ाक़उल्ला ने वुळर्बानियां दीं, जिसे आज़ाद कराने के लिए मज़दूरों, किसानों, जहाज़ियों और अनेक मासूमों ने अपना ख़ून बहाया था, क्या यह देश एक रह पाएगा?

सब : क्या यह देश एक रह पाएगा?

राजू गाइडः अगर आज यह धर्म के ठेकेदार अपने मंसूबों में कामयाब हो जाते हैं, तो गांधी जी की शहादत बेकार जाएगी, और हर रोज़ एक नए शहर में दंगे होंगे। और एक बार फिर रोज़गार की, शिक्षा की और भूख की लड़ाई कमज़ोर पड़ जाएगी।

आदमी : आओ आज हम सब एक आवाज़ में कहें कि बस बहुत हो चुका।

औरत : आज से धर्म हमारा निजी मामला होगा लड़ाई-झगड़े का मुद्दा नहीं।

आदमी : अब अगर हम ईंट उठाएंगे तो घर बनाने के लिए।

सब : ईंट उठाएंगे तो घर बनाने के लिए।

आदमी : अब अगर हम ईंट उठाएंगे तो हर ग़रीब को, हर मज़लूम को छत मुहैया कराने के लिए।

आदमी : *;गाता* हैद्ध अरे अशफ़ाकउल्ला, भगत सिंह के लहू की खाते हैं कसम

मिल के चलेंगे, एक रहेंगे, एकता है अपना धर्म
ये है हिंदुस्तान, नहीं ये टुकड़े में बंट पाएगा
धर्म के नाम पे ख़ून नहीं सड़कों पे बहाया जाएगा।
हर मुश्किल आसान करेंगे हर बंधन को तोड़ेंगे
एके का परचम, सब मिलकर दुनिया में लहराएंगे।

o